कमला नेहरू महिला महाविद्यालय

हिंदी विभाग ; ई – पत्रिका

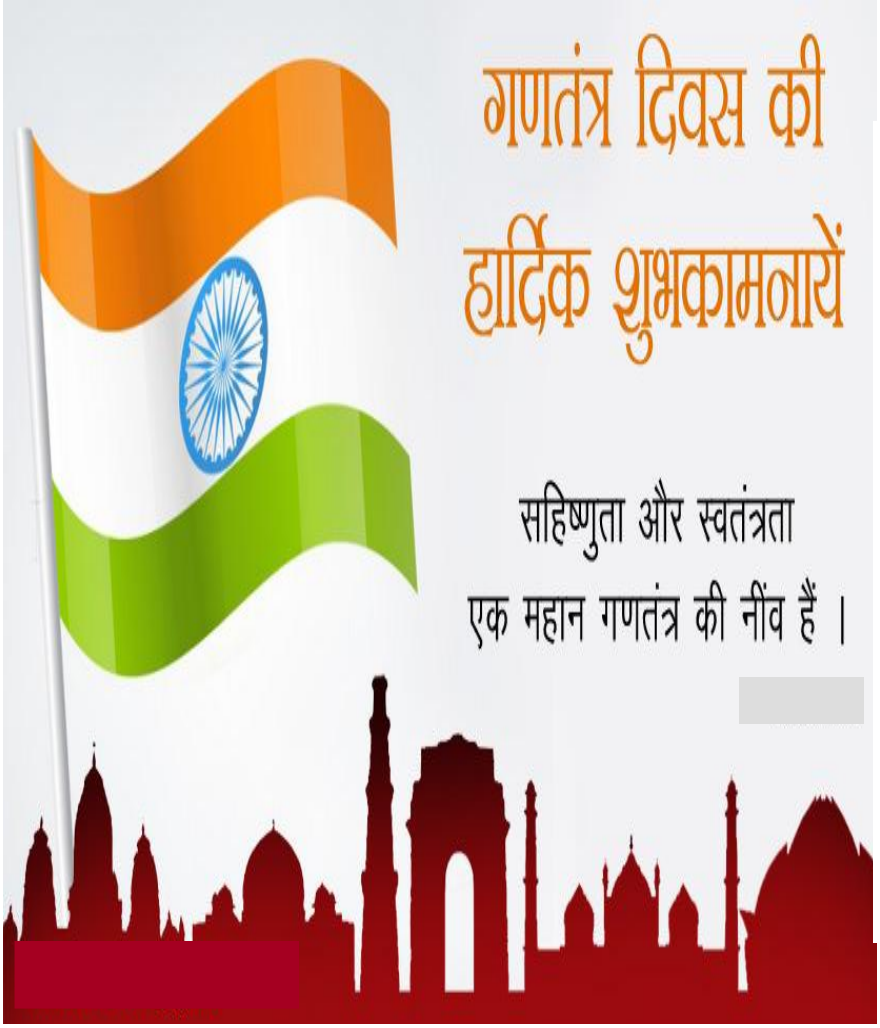

हिंदी भारती

जनवरी - 2018

संपादक मंडली

संपादक : डॉ. वेदुला रामालक्ष्मी

डॉ. मनोरमा मिश्रा

उप – संपादक : कु. प्रियंका प्रियदर्शिनी परिडा

कु. शुभश्री शताब्दी दास

संपादकीय

"हिंदी भारती" का जनवरी अंक देश के नाम समर्पित है। आप सभी पाठकों को "गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनायें" । सृजन के पलों की उपज है "हिंदी भारती" । हिंदी विभाग का यह प्रयास है कि ई - पत्रिका के माध्यम से छात्राओं में हिंदी लेखन एवं पठन में रुची हो, साथ ही हिंदी एवं हिंदी साहित्य की समृद्धशाली परम्परा से परिचय हो ।अत: कोशिश की जाती है कि सृजन के साथ - साथ भाषा एवं साहित्य से सम्बंधित अन्य महत्वपूर्ण जानकारी भी छात्राओं तथा पाठकों तक समय - समय पर पहुँचती रहे । इस मासिक पत्रिका का पांचवां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है । आशा है आपका आदर और स्नेह इसी तरह मिलता रहेगा ।

संपादक : डॉ. वेदुला रामालक्ष्मी

डॉ. मनोरमा मिश्रा

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को:

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय,

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म
और उपासना की स्वतंत्रता,

प्रतिष्ठा और अवसर की समता

प्राप्त कराने के लिए, तथा उन सब में

व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता
और अखंडता सुनिश्चित करने वाली बंधुता

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर अपनी इस संविधान सभा में आज तारीख 26 नवम्बर, 1949 ई० (मिति मार्गशीर्ष शुक्ला सप्तमी, संवत् दो हजार छह विक्रमी) को एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।

(1976 में संविधान में किए गए 42वें संशोधन के पश्चात्)

प्रकाशक:- निदेशक, सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, हिमाचल प्रदेश/दिसम्बर, 2006/10,000

गणतन्त्र दिवस

गणतन्त्र दिवस भारत का एक राष्ट्रीय पर्व है जो प्रति वर्ष 26 जनवरी को मनाया जाता है। इसी दिन सन् 1950 को भारत सरकार अधिनियम (एक्ट) (1935) को हटाकर भारत का संविधान लागू किया गया था।[1] एक स्वतंत्र गणराज्य बनने और देश में कानून का राज स्थापित करने के लिए संविधान को 26 नवम्बर 1949 को भारतीय संविधान सभा द्वारा अपनाया गया और 26 जनवरी 1950 को इसे एक लोकतांत्रिक सरकार प्रणाली के साथ लागू किया गया था। 26 जनवरी को इसलिए चुना गया था क्योंकि 1930 में इसी दिन भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आई० एन० सी०) ने भारत को पूर्ण स्वराज घोषित किया था। यह भारत के तीन राष्ट्रीय अवकाशों में से एक है, अन्य दो स्वतंत्रता दिवस और गांधी जयंती हैं।

इतिहास

सन् 1929 के दिसंबर में लाहौर में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अधिवेशन पंडित जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में हुआ जिसमें प्रस्ताव पारित कर इस बात की घोषणा की गई कि यदि अंग्रेज सरकार 26 जनवरी 1930 तक भारत को स्वायत्तयोपनिवेश (डोमीनियन) का पद नहीं प्रदान करेगी, जिसके तहत भारत ब्रिटिश साम्राज्य में ही स्वशासित एकाई बन जाता, तो भारत अपने को पूर्णतः स्वतंत्र घोषित कर देगा। 26 जनवरी 1930 तक जब अंग्रेज सरकार ने कुछ नहीं किया तब कांग्रेस ने उस दिन भारत की पूर्ण स्वतंत्रता के निश्चय की घोषणा की और अपना सक्रिय आंदोलन आरंभ किया। उस दिन से 1947 में स्वतंत्रता प्राप्त होने तक 26 जनवरी गणतंत्र दिवस के रूप में मनाया जाता रहा। इसके पश्चात स्वतंत्रता प्राप्ति के वास्तविक दिन 15 अगस्त को भारत के स्वतंत्रता दिवस के रूप में स्वीकार किया गया। भारत के आज़ाद हो जाने के बाद संविधान सभा की घोषणा हुई और इसने अपना कार्य 9 दिसम्बर 1947 से आरम्भ कर दिया। संविधान सभा के सदस्य भारत के राज्यों की सभाओं के निर्वाचित सदस्यों के द्वारा चुने गए थे। डॉ० भीमराव आंबेडकर, जवाहरलाल नेहरू, डॉ राजेन्द्र प्रसाद, सरदार वल्लभ भाई पटेल, मौलाना अबुल कलाम आजाद आदि इस सभा के प्रमुख सदस्य थे। संविधान निर्माण में कुल 22 समितीयां थी जिसमें प्रारूप समिति (ड्राफ्टींग कमेटी) सबसे प्रमुख एवं महत्त्वपूर्ण समिति थी और इस समिति का कार्य संपूर्ण ‘संविधान लिखना’ या ‘निर्माण करना’ था। प्रारूप समिति के अध्यक्ष विधिवेत्ता डॉ० भीमराव आंबेडकर थे। प्रारूप समिति ने और

उसमें विशेष रूप से डॉ. आंबेडकर जी ने 2 वर्ष, 11 माह, 18 दिन में भारतीय संविधान का निर्माण किया और संविधान सभा के अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद को 26 नवम्बर 1949 को भारत का संविधान सुपूर्द किया, इसलिए **26 नवम्बर** दिवस को भारत में **संविधान दिवस** के रूप में प्रति वर्ष मनाया जाता है। संविधान सभा ने संविधान निर्माण के समय कुल 114 दिन बैठक की। इसकी बैठकों में प्रेस और जनता को भाग लेने की स्वतन्त्रता थी। अनेक सुधारों और बदलावों के बाद सभा के 308 सदस्यों ने 24 जनवरी 1950 को संविधान की दो हस्तलिखित कॉपियों पर हस्ताक्षर किये। इसके दो दिन बाद संविधान 26 जनवरी को यह देश भर में लागू हो गया। 26 जनवरी का महत्व बनाए रखने के लिए इसी दिन संविधान निर्मात्री सभा (कांस्टीट्यूएंट असेंबली) द्वारा स्वीकृत संविधान में भारत के गणतंत्र स्वरूप को मान्यता प्रदान की गई।

गणतंत्र दिवस समारोह

राजपथ पर प्रथम गणतंत्र समारोह में सम्मलित होने (घोड़े की बग्घी में) जाते देश प्रथम राष्ट्रपति राजेन्द्र प्रसाद।

अग्नि-२ मिसाइल का वर्ष २००४ की परेड में प्रदर्शन

26 जनवरी को गणतंत्र दिवस समारोह पर भारत के राष्ट्रपति द्वारा भारतीय राष्ट्र ध्वज को फहराया जाता हैं और इसके बाद सामूहिक रूप में खड़े होकर राष्ट्रगान गाया जाता है। गणतंत्र

दिवस को पूरे देश में विशेष रूप से भारत की राजधानी दिल्ली में बहुत उत्साह के साथ मनाया जाता है। इस अवसर के महत्व को चिह्नित करने के लिए हर साल एक भव्य परेड इंडिया गेट से राष्ट्रपति भवन (राष्ट्रपति के निवास) तक राजपथ पर राजधानी, नई दिल्ली में आयोजित किया जाता है। इस भव्य परेड में भारतीय सेना के विभिन्न रेजिमेंट, वायुसेना, नौसेना आदि सभी भाग लेते हैं। इस समारोह में भाग लेने के लिए देश के सभी हिस्सों से राष्ट्रीय कडेट कोर व विभिन्न विद्यालयों से बच्चे आते हैं, समारोह में भाग लेना एक सम्मान की बात होती है। परेड प्रारंभ करते हुए प्रधानमंत्री अमर जवान ज्योति (सैनिकों के लिए एक स्मारक) जो राजपथ के एक छोर पर इंडिया गेट पर स्थित है पर पुष्प माला डालते हैं| इसके बाद शहीद सैनिकों की स्मृति में दो मिनट मौन रखा जाता है। यह देश की संप्रभुता की रक्षा के लिए लड़े युद्ध व स्वतंत्रता आंदोलन में देश के लिए बलिदान देने वाले शहीदों के बलिदान का एक स्मारक है। इसके बाद प्रधानमंत्री, अन्य व्यक्तियों के साथ राजपथ पर स्थित मंच तक आते हैं, राष्ट्रपति बाद में अवसर के मुख्य अतिथि के साथ आते हैं।

परेड में विभिन्न राज्यों की प्रदर्शनी भी होती हैं, प्रदर्शनी में हर राज्य के लोगों की विशेषता, उनके लोक गीत व कला का दृश्यचित्र प्रस्तुत किया जाता है। हर प्रदर्शिनी भारत की विविधता व सांस्कृतिक समृद्धि प्रदर्शित करती है। परेड और जुलूस राष्ट्रीय टेलीविजन पर प्रसारित होता है और देश के हर कोने में करोड़ों दर्शकों के द्वारा देखा जाता है। 2014 में, भारत के 64वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर, महाराष्ट्र सरकार के प्रोटोकॉल विभाग ने पहली बार मुंबई के मरीन ड्राईव पर परेड आयोजित की, जैसी हर वर्ष नई दिल्ली में राजपथ में होती है।

लीसा, ममता, +3 द्वितीय वर्ष

<u>गणतंत्र दिवस परेड के मुख्य अतिथि</u>

भारतीय गणतंत्र दिवस के मुख्य अतिथियों की सूची:

वर्ष	पद और मुख्य अतिथि का नाम	सम्बंधित देश
2018	सभी दस आसियान देशों के प्रमुख	ब्रुनेई, कंबोडिया, इंडोनेशिया, लाओस, मलेशिया, म्यांमार, फिलीपींस, सिंगापुर, थाइलैंड और वियतनाम
2017	क्राउन प्रिंस, शेख मोहमद बिन ज़ायेद अल नाह्यान	अबु धाबी
2016	राष्ट्रपति, फ्रांस्वा ओलांद	फ्राँस
2015	राष्ट्रपति, बराक ओबामा	यूएसए
2014	प्रधानमंत्री, शिंजों आबे	जापान
2013	राजा, जिग्मे केसर नामग्याल वाँगचुक	भूटान
2012	प्रधानमंत्री, यिंगलुक शिनवात्रा	थाईलैंड
2011	राष्ट्रपति, सुसीलो बमबंग युद्धोयुनो	इंडोनेशिया
2010	राष्ट्रपति, ली म्यूंग बक	कोरिया गणराज्य
2009	राष्ट्रपति, नूरसुलतान नजरबयेव	कज़ाकिस्तान
2008	राष्ट्रपति, निकोलस सरकोजी	फ्रांस
2007	राष्ट्रपति, व्लादिमीर पुतिन	रुस
2006	राजा, अब्दुल्ला बिन अब्दुल्लाजिज़ अल-सऊद	सऊदी अरेबिया
2005	राजा, जिग्मे सिंघे वाँगचुक	भूटान
2004	राष्ट्पति, लूइज़ इनैसियो लूला दा सिल्वा	ब्राजील
2003	राष्ट्पति, मोहम्मदम खतामी	इरान
2002	राष्ट्पति, कसाम उतीम	मॉरीशस
2001	राष्ट्पति, अब्देलाज़िज बुटेफ्लिका	अलजीरीया
2000	राष्ट्पति, ओलूसेगुन ओबाझाँजो	नाइजीरिया
1999	राजा बिरेन्द्र बीर बिक्रम शाह देव	नेपाल

1998	राष्ट्रपति, जैक्स चिराक	फ्रांस
1997	प्रधानमंत्री, बासदियो पांडेय	त्रिनीनाद और टोबैगो
1996	राष्ट्रपति, डॉ फरनॉनडो हेनरिक कारडोसो	ब्राजील
1995	राष्ट्रपति, नेल्सन मंडेला	दक्षिण अफ्रिका
1994	प्रधानमंत्री, गोह चोक टोंग	सिंगापुर
1993	प्रधानमंत्री, जॉन मेजर	यूके
1992	राष्ट्रपति, मारियो सोर्स	पुर्तगाल
1991	राष्ट्रपति, मौमून अब्दुल गयूम	मालदीव
1990	प्रधानमंत्री, अनिरुद्ध जुगनौत	मॉरीशस
1989	गुयेन वैन लिंह	वियतनाम
1988	राष्ट्रपति, जुनियस जयवर्द्धने	श्रीलंका
1987	राष्ट्रपति, ऐलेन गार्सिया	पेरु
1986	प्रधानमंत्री, एँड्रियास पपनड्रीयु	ग्रीस
1985	राष्ट्रपति, रॉल अलफोन्सिन	अर्जेन्टीना
1984	राजा जिग्मे सिंघे वाँगचुक	भूटान
1983	राष्ट्रपति, सेहु शगारी	नाइजीरिया
1982	राजा, जॉन कार्लोस प्रथम	स्पेन
1981	राष्ट्रपति, जोस लोपेज़ पोरेटील्लो	मेक्सिको
1980	राष्ट्रपति, वलेरी गिस्कार्ड द इस्टेइंग	फ्रांस
1979	प्रधानमंत्री, मलकोल्म फ्रेज़र	ऑस्ट्रेलिया
1978	राष्ट्रपति, पैट्रीक हिलेरी	ऑयरलौंड
1977	प्रथम सचिव, एडवर्ड गिरेक	पौलैण्ड
1976	प्रधानमंत्री, जैक्स चिराक	फ्रांस
1975	राष्ट्रपति, केनेथ कौंडा	जांबिया
1974	राष्ट्रपति, जोसिप ब्रौज टीटो	यूगोस्लाविया
	प्रधानमंत्री, सिरीमावो रतवत्ते दियास बंदरनायके	श्रीलंका
1973	राष्ट्रपति, मोबुतु सेस सीको	जैरे
1972	प्रधानमंत्री, सीवुसागर रामगुलाम	मॉरीशस
1971	राष्ट्रपति, जुलियस नीयरेरे	तंजानिया

1970	–	–
1969	प्रधानमंत्री, टोडर ज़िकोव	बुल्गारिया
1968	प्रधानमंत्री, एलेक्सी कोज़ीगिन	सोवियत यूनियन
	राष्ट्रपति, जोसिप ब्रोज टीटो	यूगोस्लाविया
1967	–	–
1966	–	–
1965	खाद्य एवं कृषि मंत्री, राना अब्दुल हामिद	पाकिस्तान
1964	–	–
1963	राजा, नोरोदम शिनौक	कंबोडिया
1962	–	–
1961	रानी, एलिज़ाबेथ द्वितीय	यूके
1960	राष्ट्रपति, क्लिमेंट वोरोशिलोव	सोवियत संघ
1959	–	–
1958	मार्शल यि जियानयिंग	चीन
1957	–	–
1956	–	–
1955	गर्वनर जनरल, मलिक गुलाम मोहम्मद	पाकिस्तान
1954	राजा, जिग्मे दोरजी वाँगचुक	भूटान
1953	–	–
1952	–	–
1951	–	–
1950	राष्ट्रपति, सुकर्णो	इंडोनेशिया

शबाना, +3 द्वितीय वर्ष

<u>भारतीय स्वतंत्रता संग्राम महिलाओं की भूमिका</u>

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई केवल पुरुषों की हिस्सेदारी से फतह नहीं की गयी बल्कि इस महायज्ञ में महिलाओं की भूमिका भी उल्लेखनीय है। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। अंग्रेजों के विरूद्ध पुरूषों के कंधे से कंधा मिलाकर देश की बेटियों ने अपना कर्तव्य निभाया। उन्होंने अंग्रेजों के विरूद्ध कदम उठाए, वीरता और साहस तथा नेतृत्व की क्षमता का अभूतपूर्व परिचय दिया। 1857 के बगावत के समय राजघराने की महिलाएं आजाद भारत का सपना पूरा करने के लिए पुरूषों के साथ एकजुट हुईं। इनमें प्रमुख थीं इन्दौर की महारानी अहिल्याबाई होल्कर और झांसी की महारानी लक्ष्मीबाई। 1857 की हार के बाद ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी का स्थान ब्रिटिश सरकार ने ले लिया और ब्रिटिश शासन एक ऐतिहासिक सच बन गया।

इतिहास गवाह है कि भारत के स्वतंत्रता संग्राम में जहां पुरुषों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया, तो महिलाएं भी पीछे नहीं रहीं। महिलाओं ने समय-समय पर अपनी बहादुरी और साहस का प्रयोग कर पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिला कर चली। रानी लक्ष्मी बाई और रानी चेनम्मा जैसी वीरांगनाओं ने अंग्रेजों से लड़ते हुए अपनी जान दे दी। तो सरोजिनी नायडू और लक्ष्मी सहगल जैसी वीरांगनाओं ने देश की आजादी के बाद भी सेवा की। आज आप इस अध्याय में उन महिलाओं के बारे में सामान्य ज्ञान जानकारी प्राप्त करेंगे जिन्होंने भारत को आज़ाद कराने में प्रमुख भूमिका निभाई थी।

<u>रानी लक्ष्मीबाई</u>: रानी लक्ष्मीबाई मराठा शासित झाँसी राज्य की रानी थीं और 1857 के प्रथम भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में अंग्रेजी हुक़ूमत के विरुद्ध बिगुल बजाने वाले वीरों में से एक थीं। वे ऐसी वीरांगना थीं जिन्होंने मात्र 23 वर्ष की आयु में ही ब्रिटिश साम्राज्य की सेना से मोर्चा लिया और रणक्षेत्र में वीरगति को प्राप्त हो गयीं परन्तु जीते जी अंग्रेजों को अपने राज्य झाँसी पर कब्जा नहीं करने दिया।

ऊषा मेहता: स्वतंत्रता सेनानी ऊषा मेहता ने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई थी। भारत छोड़ो आंदोलन (1942) के दौरान कुछ महीनों तक कांग्रेस रेडियो काफ़ी सक्रिय रहा था। वह भारत छोड़ो आंदोलन के समय खुफिया कांग्रेस रेडियो चलाने के कारण पूरे देश में विख्यात हुईं। इस रडियो के कारण ही उन्हें पुणे की येरवाड़ा जेल में रहना पड़ा। वे महात्मा गांधी की अनुयायी थीं।

दुर्गा बाई देशमुख: दुर्गाबाई देशमुख भारत की स्वतंत्रता सेनानी, सामाजिक कार्यकर्ता तथा स्वतंत्र भारत के पहले वित्तमंत्री चिंतामणराव देशमुख की पत्नी थीं। दुर्गा बाई देशमुख ने महात्मा गांधी के सत्याग्रह आंदोलन में भाग लिया व भारत की आज़ादी में एक वकील, समाजिक कार्यकर्ता, और एक राजनेता की सक्रिय भूमिका निभाई। उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र से लेकर महिलाओं, बच्चों और ज़रूरतमंद लोगों के पुनर्वास तथा उनकी स्थिति को बेहतर बनाने हेतु एक 'केंद्रीय समाज कल्याण बोर्ड' की नींव रखी थी।

अरुणा आसफ़: अरुणा आसफ़ अली भारतीय स्वतंत्रता सेनानी थीं। उनका जन्म का नाम अरुणा गांगुली था। उन्हे 1942 मे भारत छोडो आंदोलन के दौरान, मुंबईv के गोवालीया मैदान मे कांग्रेस का झंडा फहराने के लिये हमेशा याद किया जाता है। उन्होंने एक कार्यकर्ता होने के नाते नमक सत्याग्रह में भाग लिया और लोगों को अपने साथ जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की मासिक पत्रिका 'इंकलाब' का भी संपादन किया। सन् 1998 में उन्हें भारत रत्न से सम्मानित किया गया था।

सुचेता कृपलानी: सुचेता कृपलानी एक स्वतंत्रता सेनानी थी और उन्होंने विभाजन के दंगों के दौरान महात्मा गांधी के साथ रह कर कार्य किया था। इंडियन नेशनल कांग्रेस में शामिल होने के बाद उन्होंने राजनीति में प्रमुख भूमिका निभाई थी। उन्हें भारतीय संविधान के निर्माण के लिए गठित संविधान सभा की ड्राफ्टिंग समिति के एक सदस्य के रूप में निर्वाचित किया गया था। उन्होंने भारतीय संविधान सभा में 'वंदे मातरम' भी गाया था। सुचेता कृपलानी उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री बनीं और भारत की प्रथम महिला मुख्यमंत्री थीं।

विजयलक्ष्मी पंडित: विजय लक्ष्मी पंडित भारत के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरु की बहन थीं। भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में विजय लक्ष्मी पंडित ने अपना अमूल्य योगदान दिया। सविनय अवज्ञा आंदोलन में भाग लेने के कारण उन्हें जेल में बंद किया गया था। भारत के राजनीतिक इतिहास में वह पहली महिला मंत्री थीं। वे संयुक्त राष्ट्र की पहली भारतीय

महिला अध्यक्ष थीं और स्वतंत्र भारत की पहली महिला राजदूत थीं जिन्होंने मास्को, लंदन और वॉशिंगटन में भारत का प्रतिनिधित्व किया।

<u>कमला नेहरू</u>: कमला नेहरू भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के शीर्ष नेता एवं भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू की धर्मपत्नी थी। कमला नेहरू महिला लौह स्त्रीव साबित हुई, जो धरने-जुलूस में अंग्रेजों का सामना करती, भूख हड़ताल करती और जेल की पथरीली धरती पर सोती थी। नेहरू के साथ-साथ कमला नेहरू और फ़िर इंदिरा की प्रेरणाओं में देश की आज़ादी ही सर्वोपरि थी। असहयोग आंदोलन और सविनय अवज्ञा आंदोलन में उन्होंने बढ़-चढ़कर शिरकत की थी।

<u>सरोजिनी नायडू</u>: सरोजिनी नायडु पहली भारतीय महिला कॉग्रेस अध्यक्ष और 'भारत की कोकिला' इस विशेष नाम से पहचानी जाती है। सरोजिनी नायडू ने खिलाफ़त आंदोलन की बागडोर संभाली और अग्रेजों को भारत से निकालने में अहम योगदान दिया।

<u>कस्तूरबा गांधी</u>: कस्तूरबा गांधी महात्मा गांधी की पत्नी जो भारत में बा के नाम से विख्यात है। आज़ादी की लड़ाई में उन्होंने हर कदम पर अपने पति का साथ दिया था, बल्कि यह कि कई बार स्वतंत्र रूप से और गांधीजी के मना करने के बावजूद उन्होंने जेल जाने और संघर्ष में शिरकत करने का निर्णय लिया। उन्होंने लोगों को शिक्षा, अनुशासन और स्वास्थ्य से जुड़े बुनियादी सबक सिखाए और आज़ादी की लड़ाई में पर्दे के पीछे रह कर सराहनीय कार्य किया है।

<u>मैडम भीकाजी कामा</u>: मैडम भीकाजी कामा ने आज़ादी की लड़ाई में एक सक्रिय भूमिका निभाई थी। वह भारतीय मूल की पारसी नागरिक थीं जिन्होने लन्दन, जर्मनी तथा अमेरिका का भ्रमण कर भारत की स्वतंत्रता के पक्ष में माहौल बनाया। वे जर्मनी के स्टटगार्ट नगर में 22 अगस्त 1907 में हुई सातवीं अंतर्राष्ट्रीय कांग्रेस में भारत का प्रथम तिरंगा राष्ट्रध्वज फहराने के लिए सुविख्यात हैं। भीकाजी ने स्वोतंत्रता सेनानियों की आर्थिक मदद भी की और जब देश में 'प्लेग' फैला तो अपनी जान की परवाह किए बगैर उनकी भरपूर सेवा की। स्वतंत्रता की लड़ाई में उन्होंने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

<u>एनी बेसेन्ट</u>: प्रख्यात समाज सुधारक और स्वतंत्रता सेनानी एनी बेसेंट ने भारत को एक सभ्यता के रूप में स्वीकार किया था तथा भारतीय राष्ट्रवाद को अंगीकार किया था। 1890 में ऐनी बेसेंट हेलेना ब्लावत्सकी द्वारा स्थापित थियोसोफिकल सोसाइटी, जो हिंदू धर्म और उसके आदर्शों का प्रचार-प्रसार करती हैं, की सदस्या बन गईं। भारत आने के बाद भी ऐनी बेसेंट महिला

अधिकारों के लिए लड़ती रहीं। महिलाओं को वोट जैसे अधिकारों की मांग करते हुए ऐनी बेसेंट लागातार ब्रिटिश सरकार को पत्र लिखती रहीं। भारत में रहते हुए ऐनी बेसेंट ने स्वराज के लिए चल रहे होम रूल आंदोलन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

<u>बेगम हज़रत महल</u>: बेगम हज़रत महल अवध के शासक वाजिद अली शाह की पहली पत्नी थीं। सन 1857 में भारत के पहले स्वतंत्रता संग्राम में उन्होंने ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ विद्रोह किया। इन्होंने लखनऊ को अंग्रेज़ों से बचाने के लिए भरसक प्रयत्न किए और सक्रिय भूमिका निभाई। बेगम हजरत महल की हिम्मत का इसी से अंदाजा लगाया जा सकता है कि उन्होंने मटियाबुर्ज में जंगे-आज़ादी के दौरान नज़रबंद किए गए वाजिद अली शाह को छुड़ाने के लिए लार्ड कैनिंग के सुरक्षा दस्ते में भी सेंध लगा दी थी। योजना का भेद खुल गया, वरना वाजिद अली शाह शायद आज़ाद करा लिए जाते।

<u>डॉ. लक्ष्मी सहगल</u>: पेशे से डॉक्टर लक्ष्मी सहगल ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम के साथ-साथ सामाजिक कार्यकर्ता के तौर पर प्रमुख भूमिका निभाई थी। उनका पूरा नाम लक्ष्मी स्वामीनाथन सहगल था। वे आजाद हिन्द फौज की अधिकारी तथा आजाद हिन्द सरकार में महिला मामलों की मंत्री थीं। वे व्यवसाय से डॉक्टर थी जो द्वितीय विश्वयुद्ध के समय प्रकाश में आयीं। वे आजाद हिन्द फौज की 'रानी लक्ष्मी रेजिमेन्ट' की कमाण्डर थीं। उन्हें वर्ष 1998 में पद्म विभूषण से नवाजा गया था।

<u>कनकलता बरुआ</u>: कनकलता बरुआ असम की रहने वाली थीं। उन्होंने भारत छोड़ो आंदोलन में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। भारत छोड़ो आंदोलन के समय उन्होंने कोर्ट परिसर और पुलिस स्टेशन के भवन पर भारत का तिरंगा फहराया। कनकलता बरुआ महज 17 साल की उम्र में पुलिस स्टेशन पर तिरंगा फहराने की कोशिश के दौरान पुलिस की गोलियों का शिकार बन गईं।

लिज़ा मिश्र, +3 द्वितीय वर्ष

<u>स्वतंत्रता आंदोलन में बंगाल का योगदान</u>

सैकड़ो वर्ष से गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ भारत सन् 1947 में आजाद हुआ | यह आजादी लाखों लोगों के त्याग और बलिदान के कारण संभव हो पाई है | इन महान लोगों ने अपना तन मन धन त्याग कर देश की आजादी के लिए सब कुछ न्योछावर कर दिया आपने परिवार, घर बार और दुःख सुख को भूल देश की कई महान सपूतों ने अपने प्राणों की आहुति में चैन की सांस ले सके। स्वतंत्रता आंदोलन में समाज के हर तब वे और देश के हर भाग के लोगों ने हिस्सा लिया |

स्वतंत्र भारत का हरएक व्यक्ति आज इन शहीदों और महापुरुषों का ऋणी है, जिन्होंने अपना सब कुछ छोड़ सम्पूर्ण जीवन देश की आजादी के लिए समर्पित कर दिया | भारत माता के ये महान सपूत आज हम सब के लिए प्रेरणा के स्रोत है, इनके जीवन गाथा हम सभी को इनके संघर्षों की बार बार याद दिलाती है और प्रेरणा देती है |

बंगाल में बहुत सारे ऎसे लोग हैं जो अपनी देश के लिए बलिदान दे कर शहीद हो गये, जैसे की सुभाषचंद्र बोस, बिपिन चंद्र पाल, कमलादेवी चटॉपाध्याय ऎसे ही बहुत सारे लोग अपने देश के लिए शहीद हो गये।

<u>सुभाष चंद्र बोस</u>:--जो नेता जी के नाम से भी जाने जाते हैं | भारत के स्वतंत्रता संग्राम के अग्रणी नेता थे। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान, अंग्रेजों के खिलाफ़ लड़ने के लिए उन्होंने जापान के सहयोग से आजाद हिंद फौज का गठन किया था। उनके द्वारा दिया गया जय हिंद नारा भारत का राष्ट्रीय नारा बन गया है |

<u>कमलादेवी चटॉपाध्याय</u> :--कमलादेवी चटॉपाध्याय एक समाज सुधारक, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी नारी आन्दोलन की मार्ग प्रदर्शक तथा भारतीय हस्तकला के क्षेत्र में नव जागरण लाने वाली गांधीवादी महिला थी। ये एक सामाजिक कार्यकर्ता, कला और साहित्य की समर्थक भी थी। महात्मा गांधी के आह्वान के चलते वे राष्ट्र सेवा से जुड़ गई |

<u>बिपिन चंद्र पाल</u> :-- बिपिन चंद्र पाल एक भारतीय क्रांतिकारी, शिक्षक, पत्रकार व लेखक थे। पाल उन महान विभूतियों में शामिल हैं, जिन्होंने भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन की बुनियादी तैयार करने में प्रमुख भूमिका निभाई। वे (लाल - बाल - पाल) तिकड़ी का हिस्सा थे। अंग्रेजी हुकूमत की जड़ें हिला दी थी। बिपिन चंद्र पाल राष्ट्रवादी नेता होने के साथ एक शिक्षक, पत्रकार, लेखक व बेहतरीन वक्ता भी थे उन्हें भारत मे क्रांतिकारी विचारों का जनक भी मना जाता है |

इसी तरह भारत की स्वतंत्रता आंदोलन में बंगाल का बहुत ही मात्रा में योगदान रहा।

सोनाली सेठी, +3 द्वितीय वर्ष

तिरंगा

बस इस तिरंगे की पहचान को देखना
कभी इन पत्थरों पर चलके देखना
कभी इस मिट्टी की खुशबू महसूस करके देखना
है हर चाल में कितना प्यार,
कभी आजमा के देखना
बस इस तिरंगे की पहचान को देखना।।

जिसने अपने प्राणों की बलि दी
उनके परिवार को देखना
उन सिपाहियों की किसी कोनों में बुझे दिये की आस को देखना
उनके आँगन में गूंजते वन्दे मातरम को सुनना
बस इस तिरंगे की पहचान को देखना।।

थोड़ी दिये की लौ खुद के दिल में भी जलाओ
किसी के आंसुओं की कीमत तुम भी जानो
ऐसा कर जाओ कि खाली न जाए वो कुर्बानियाँ
मिट्टी के हर कण में वन्दे मातरम सुनाई दे जाए
बस इस तिरंगे की पहचान को देखना।।

इसके तीनो रंगो की पहचान को देखना
एक हाथ में गीता रखना दूजे हाथ कुरान रखना
मजहब, जाति, भाषा की दीवार न हो
इसका ख्याल रखना
प्यार और देश भक्ति की चूनर ओढ़े ऐसा
हिंदुस्तान बनाये रखना
बस इस तिरंगे की पहचान को देखना।।

सोनिया नायक, **+3 द्वितीय वर्ष**

माता पिता

अक्सर ये कहा जाता है कि एक व्यक्ति बचपन से बड़े होने तक माँ बाप उसकी देखभाल करते है और माता पिता उससे ये उम्मीद करते है कि अपने बुढ़ापे में वो भी उनकी देखभाल ठीक उसी प्रकार से करे। लेकिन क्या होता है?? उनकी आशा-आशा में ही रह जाती है। वे जो चाहते है उनको वह मिलता नहीं। बदले मे सिर्फ नफरत मिलती है। एक बच्चे कि पैदा होने के बाद उसकी हर इच्छा माँ बाप पूरी करते है। और जब वही बच्चा बड़ा होकर नौकरी करता है तब वो माँ बाप को ही भूल जाते है। आपने कर्तव्य का पालन नही करते हैं। उनकी परिस्थिति ऐसी हो जाती कि अपने ही घर में नौकर की तरह रहना पड़ता है। अनचाही चीज़ की तरह बर्ताव करते है। अगर उनकी बात न माने तो उनको घर से निकाल दिया जाता है या कोई वृद्धाश्रम में छोड़ दिया जाता है। माँ बाप हर कदम पर बच्चे का साथ देते हैं। जबकि बच्चे उनको आधे रास्ते में छोड़ देते हैं।
आज कल के जमाने में सभी मतलबी होते है। लेकिन उनको यह जानना चाहिए कि आगे चलकर वो भी किसके माता पिता बनेंगे।

प्रियंका साहू, +3 **द्‌वितीय वर्ष**

आशा

जीवन का हर कदम लोगों के लिए आशा की नई किरण लाता है। लोग तरह तरह के स्वप्न देखते हैं। कुछ सच होते हैं तो कुछ टूट जाते हैं। अनेक प्रकार की आशा करते है, कुछ लोग उस आशा को पूरी करने के लिये मेहनत करते है और कुछ पीछे रह जाते है। जो लोग मेहनत करते है उनके हर सुबह आशा की नई किरण बनके उनके सामने आता है। और वो वहाँ तक पहुचं जाते है, जहाँ तक उनकी आशा है। और वहां से जिंदगी की शुरुवात हो जाती है।

संध्या रानी साहू, +3 **द्‌वितीय वर्ष**

जिंदगी

कभी कभी उदासी की आग है जिंदगी
कभी कभी खुशियों का बाग है जिंदगी
हंसता ओर रुलाता राग है जिंदगी
कड़वे और मीठे अनुभवों का स्वाद है जिंदगी
पर अंत में तो
किए हुए कामों का हिसाब है जिंदगी।

श्रीतपा साहू, +3 **द्‌वितीय वर्ष**

प्रेमचंद के उपन्यासों में मेहनतकश वर्ग

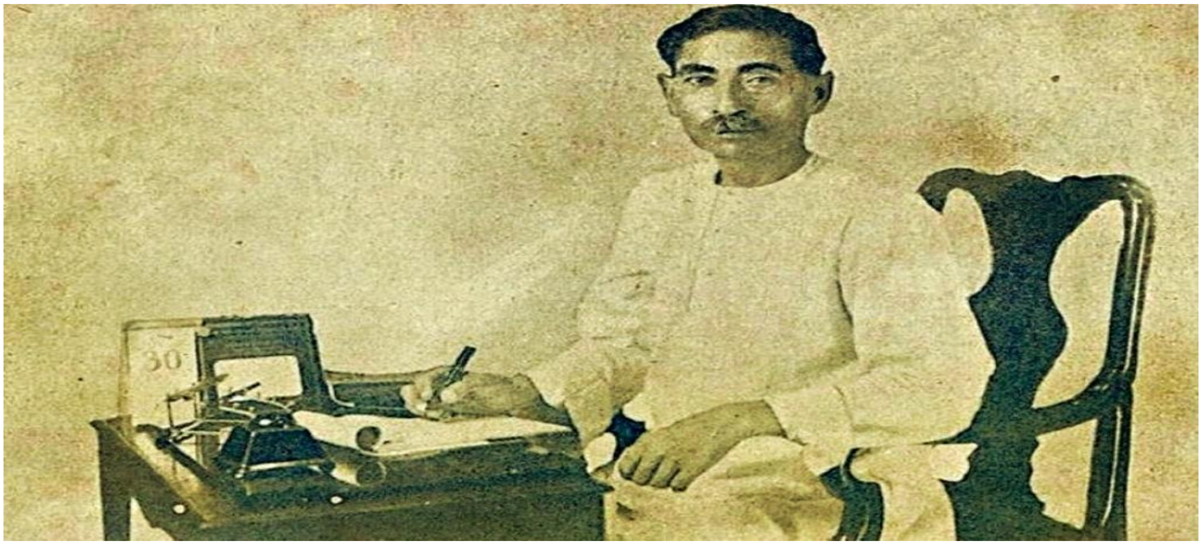

प्रेमचंद के उपन्यास में मानव जीवन की सोच से संबंधित घटनाओं पर आधारित मानव जीवन का वृतान्त होता है। उनके सभी उपन्यास में तत्कालीन भारतीय सामाजिक परिस्थिति का वर्णन देखने को मिलता है। अपने उपन्यास में उन्होंने साधारण आदमी की परिश्रम, वास्तविक जीवन का चित्रण किया है।

प्रायः देखा जाता है कि मनुष्य अपने कार्य व्यपार को इस प्रकार करता है कि संघर्षशील स्थतियों से उबरकर विपरीत परिस्थितियों को अपने अनुकूल बना सके। वह ऐसे प्रयत्न में सफल हो पाता है या नहीं ये दूसरी बात है। उपन्यासकारों के लिये यह कोई आवश्यक नहीं कि वह अपने पात्र को ऐसा सामार्थ्य प्रदान करे कि वह सांसारिक खेल में परिस्थितियों के ज्वार को लांघ कर पार कर जाए, वरना वह उसके के थपेड़ों में पड़कर डूब भी सकते है। "गोदान" में प्रेमचंद ने" होरी" को ऐसे ही पात्र के रूप में चित्रित किया है जो जीवन संघर्ष में पराजित हो गया था। इसी प्रकार उन्होंने "सेवासदन" में "कृष्ण चंद्र को भी दिखाया गया है। इसी तरह के अन्य उपन्यासों में अन्य सभी चरित्र ऐसे ही है। हालांकि जहाँ वे आवश्यकता से अधिक सिद्धान्त ओर आदर्श को बढ़ाते है, और पात्र को मानसिक स्तर पर आदर्श के बंधन में डाल देते है। वहीं पत्रों की गति में अस्वाभाविकता आ जाती है।

प्रेमचंद जी का कहना है कि "मुझे यह कहने में हिचक नहीं है कि मैं और चीज़ों की तरह कला को उपयोगता की तुला पर तोलता हूँ। कलाकार अपनी कला में सौंदर्य की सृष्टि करके

परिस्थिति को विकास के लिए उपयोगी बनाता है।"
प्रेमचंद चारित्रिक विविधता का चित्रण करते हुए भी सिद्धान्त ओर आदर्श में अपने औपन्यासिक चरित्रों में एक समानता परिलक्षित कराते है। उनके व्यक्तित्व विभिन्न रूप में प्रकट होकर भी मूलतः भावधारा में सम्पन्न होते है। नारी पात्रों में भी सेवा, त्याग और संयम का होना एक सांस्कृतिक आवश्यकता बनकर प्रकट होता है।

एक जागृत राष्ट्र के साहित्यिकार के नसों में जिस प्रकार का खून प्रवाहित होना चाहिये वही प्रेमचंद की धमनियों में बह रहा था। उन्होंने अपने उपन्यास ओर कहानियों के द्वारा देश को जागृत करने का यथाशक्ति प्रयास किया। जागरण ओर हंस नामक दो पत्रिकाएं चलाई। अपना प्रेस बना लिया और रात दिन हिंदी साहित्य की अविरत सेवा में लग गए।

वर्ग या श्रेणी किसी समाज का आवश्यक एवं अनिवार्य अंग होता है। इसका निर्माण उस समाज के श्रम, उत्पादन तथा वितरण के साधन द्वारा होता है। इसके साथ साथ मनुष्य की वंश परंपरा, शिक्षा, आय तथा व्यक्ति की प्रतिष्ठा भी उसे विशिष्ट वर्ग का व्यक्ति बनाने में सहायक होती है।

यों देखे तो प्रेमचंद जी ने बहुत से उपन्यास लिखे हैं, लेकिन उन्होंने अपने हर उपन्यास में मेहनतकश वर्ग को एक विशेष स्थान प्रदान की है। उन्होंने अपने उपन्यास के मध्यम से हमें इन वर्गों के बारे में सोचने पर मजबूर कर दिया हैं। इन वर्गों में उन्होंने साधारणतः किसान और मजदूरों को स्थान दिया है।

प्रेमचंद के उपन्यासों का केंद्रबिंदु गांव और उसमें यंत्रणा भोगने वाले किसान है। इन किसानों का सबसे अधिक शोषण करने वाले जमीदार हैं। प्रेमचंद ने इस तथ्य को बखूबी समझा दिया था कि मुख्य उत्पादक शक्ति जमींदार और किसान हैं। अतः इन दोनों के मध्य का विरोध ही उनकी दृष्टि में भारतीय समाज का मुख्य अंतरविरोध था।

प्रेमचंद का समूचा साहित्य किसानों के जीवन का आईना है। तत्कालीन समाज में किसानों की जागरूकता को भी उभरा गया है। शोषण की चक्की में पीसते हुए किसान मजदुरों की मुक्ति ही प्रेमचंद के समस्त लेखन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण उद्देश्य रहा है। प्रेमचंद जी का कहना है कि रात दिन मेहनत में अपना खून पसीना एक करने वाले ये किसान मजदूर भूखे रहते हैं और उनका खून चूसकर जीनेवाले जमींदार,साहूकार, महाजन आदि आराम से अपना जीवन निर्वाह करते हैं। किसानों का जीवन इतना कष्टमय हो जाता है कि वे मजबूर हो कर बाहर चले जाते हैं, श्रमिक का जीवन जीने के लिए कि उनको खाना तो कम से कम मिलेगा। इस यतना से प्रेमचंद

इतने पीड़ित थे कि उपन्यास के समेत अपनी सामाजिक राजनीतिक टिप्पणीयों में भी इसको भरपूर रेखांकित किया है।

किसान मजदूर के जीवन की त्रासदी का बोध प्रेमचंद को कहीं से पढ़ या सुन कर न हुआ था। वे उस जीवन के एक अभिन्न अंग थे। त्रासदी यथार्थ के धरातल पर घटित हुई दिखाई देती है। गोदान, प्रेमाश्रम, रंगभूमि, कर्मभूमि और कायाकल्प में किसानों के जीवन की त्रासदी अत्यंत मुखर हो कर सामने आई है।

इस तरह प्रेमचंद जी ने अपने उपन्यास में किसानों तथा श्रमिकों का दयनीय यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है। इससे पता चलता है कि उनका उद्देश्य शोषण और अज्ञान के जाल में फंसी हुई इन ग्रामीण जनता की मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करना है।

पिंकी सिंह, +3 **द्वितीय वर्ष**

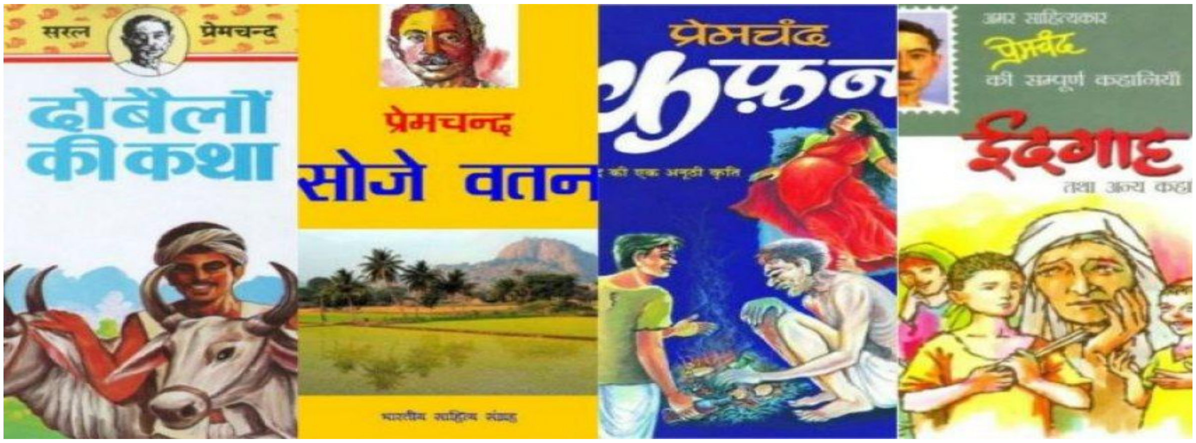

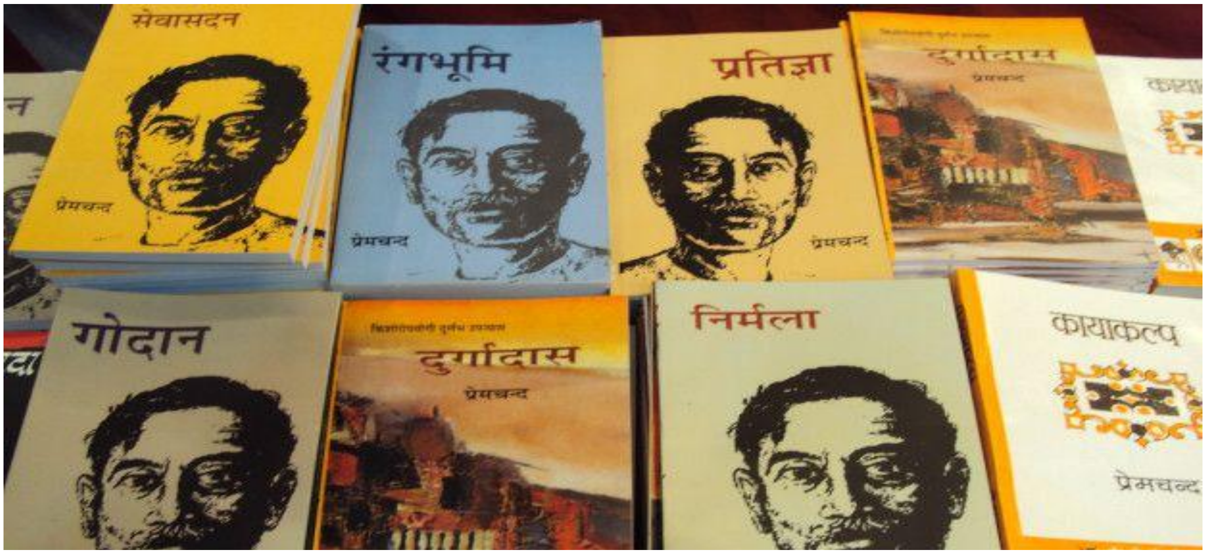

वो एक माँ थी

निकली जब मैं कॉलेज से घर जाने को
देखी एक पागल बूढ़ी औरत को ।
न जाने वो किस बात से घायल थी
जो पत्थर फेंके मारती
सब लोगों को।

अधखुली आंखे थी उसकी
गिर गए थे सब दांत।
बीच रास्ते मिट्टी से खेलती
हो कर कुछ अशांत।

एक के बाद एक लोग
आते, चले जाते,
और नजाने कुछ भाषण दे कर
किस बात पर इतराते।

बचपन से प्रारंभ हुआ टूट जाता वो नाता,
जब रास्ते मे ऐसे अनाथों की भांति घूमते है
पिता माता ।

पिंकी सिंह, +3 **द्वितीय वर्ष**

पापा

शाम होगी अभी तो
घूमने जाना है पापा।
चलते चलते थक गई
कंधे पर बिठलाओ न पापा।
अंधेरे से डर लगता है,
सीने से लगाओ न पापा।
माँ तो सो गई
अब आप ही सुला दो न पापा।
स्कूल तो पूरा हो गया
अब कॉलेज जाने दो न पापा।
पाल पोस कर बड़ा किया
अब अपने से जुदा तो न करो पापा।
अब डोली में बिठा दिया,
आँसू तो मत बहाओ न पापा।
आपकी मुस्कान अच्छी है
तो मुस्कुरा दो ना पापा।
आप ने मेरी हर बात मानी है
और एक बात मान जाओ न पापा।
इस धरती पर बोझ नहींहोती लड़कियाँ,
यह समझा दो न पापा।

शांति प्रिया दास, +3 **द्वितीय वर्ष**

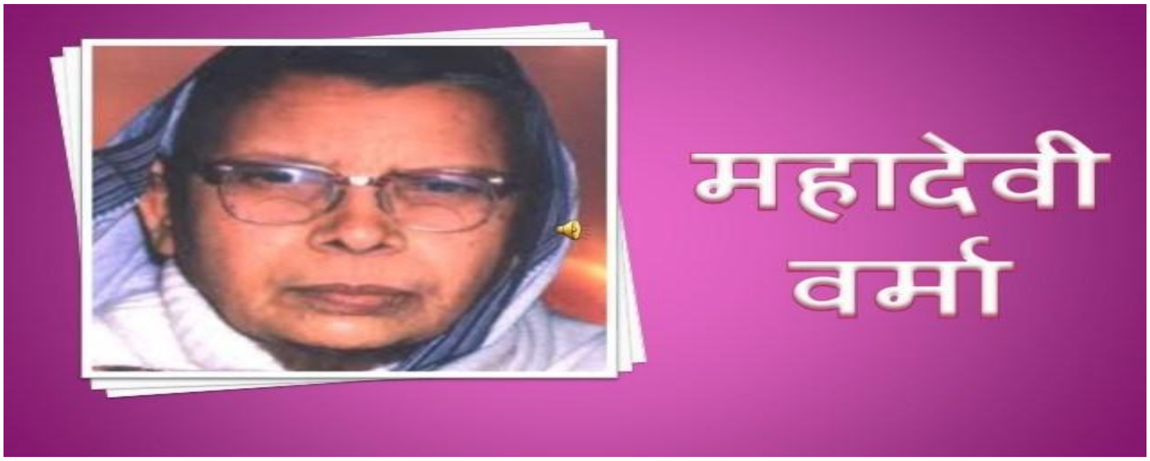

महादेवी वर्मा का जन्म 26 मार्च 1907 को उत्तरप्रदेश के फरुखाबाद जिले में हुआ था। उनके जन्म से जुड़ी एक विलक्षण बात यह है कि महादेवि वर्मा के परिवार में पिछ्ले 200 सालों से किसी कन्या का जन्म नहीं हुआ था ।

घर मे कन्या का जन्म होते ही इनके बाबा , बाबु बाँके बिहारी की खुशी का ठिकाना नही रहा। घर में आई कन्या को देवी का रूप मानते हुए इनके बाबा ने इनका नाम महादेवी वर्मा रखा। इनके पिता भी गोबिंद प्रसाद वर्मा जी एक विद्यालय में प्राध्यापक थे , और इनकी माता हेमरानी देवी पूजा पाठ में तल्लीन रहने वाली महिला थी , जिनकी वेद , पुराण और संगीत में रुचि थी।

शिक्षा-

महादेवि वर्मा ने अपना शैक्षिक जीवन इंदौर से शुरू किया, उन दिनों बाल विवाह की प्रथा प्रचलित थी। महादेवि वर्मा का भी छोटी उम्र में ही विवाह कर दिया गया। विवाह के पश्चात महादेवि ने इलाहाबाद में क्रास्थवेट कॉलेज में दाखिला लिया । उनकी कविताएं भी काफी प्रचलित हो रही थी । 1932 में महादेवि वर्मा ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम ए की परीक्षा उतीर्ण किया और उस समय तक उनके निहार तथा -राशि कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके थे ।

वैवाहिक जीवन:

महादेवि वर्मा का विवाह छोटी उम्र में ही 1916 में कर दिया गया था। उनके पति श्री स्वरूप नारायण वर्मा उस समय मात्र दसवीं कक्षा के विद्यार्थी थे। महादेवी वर्मा को विवाह बंधन में कोई खास रुचि ना थी। वह हमेशा सफेद वस्त्र ही पहनती थीं। उन्होनें कई बार अपने पति को दूसरी शादी करने के लिए भी कहा,लेकिन इनके पति ने भी दूसरी शादी नहीं की। 1966में अपने

पति की मृत्यु के बाद महादेवी वर्मा इलाहाबाद में रहने लगी।

कार्यक्षेत्र-

महादेवि वर्मा जी ने अध्यापक से अपने कार्यक्षेत्र की शुरुआत की और अंत तक प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्राध्यापक रही। महादेवि वर्मा ने कहानियाँ नहीं लिखी लेकिन इनके संस्मरण, रेखाचित्र, निबंध में मानव जीवन का गजब का चित्रण मिलता है। महिला समाज सुधारक के रूप में भी महादेवी वर्मा ने कई कार्य किये। महादेवी वर्मा ने कविताओं में वेदना और अनुभूतियों को चित्रित किया है। उनके प्रसिद्ध कविता संग्रह निहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत है। महादेवी वर्मा ने गद्य साहित्य में अपना योगदान दिया है।

सम्मान और पुरस्कार-

1- महादेवी वर्मा जी को उनके यामा काव्य संकलन के लिए "ज्ञानपीठ पुरस्कार" से सुशोभित किया गया।

2- 1888 उनके मरणो परान्त भारत सरकार ने उन्हें पदम विभूषण की उपाधि से सम्मानित किया ।

अंतिम शब्द-

महादेवी वर्मा का हिंदी साहित्य में योगदान अमूल्य है। यही कारण है कि कवि निराला ने उन्हें हिंदी साहित्य की सरस्वती कहकर पुकारा था। इसलिए वह सबसे लोकेप्रिय महिला साहित्यकार थी।

कादम्बिनी पंडा, +3 **द्वितीय वर्ष**

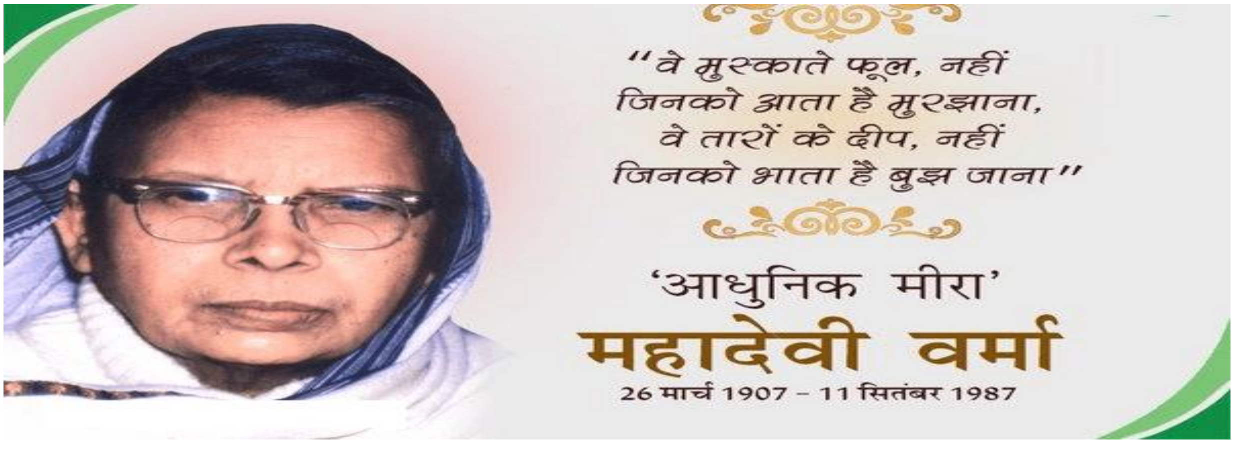

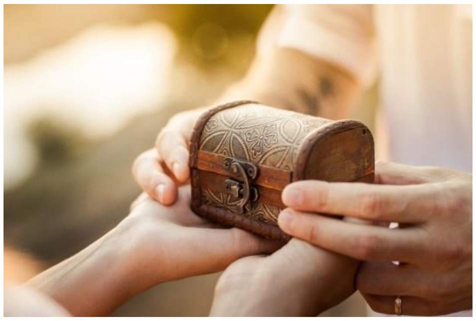

देने का सुख

एक बार एक शिक्षक संपन्न परिवार से सम्बंध रखने वाले एक युवा शिष्य के साथ कहीं टहलने निकले। उन्होंने देखा कि रास्ते में पुराने हो चुके एक जोड़ी जूते उतरे पड़े हैं, जो संभवत: पास के खेत में काम कर रहे गरीब मजदूर के थे, जो अब अपना काम खत्म कर घर वापस जाने की तैयारी कर रहा था।

शिष्य को मजाक सुझा उसने शिक्षक से कहा, "गुरु जी क्यो न हम ये जूते कहीं छिपा कर झाड़ियों के पीछे छिप जाए; जब वो मजदूर इनहें यहाँ नहीं पाकर घबराएगा तो बड़ा मजा आएगा| शिक्षक गंभीरता से बोला," किसी गरीब के साथ इस तरह का भद्दा मजाक करना ठीक नहीं है। क्यों ना हम इन जुतों में कुछ सिक्के डाल दें और छिप कर देखे की इसका मजदूर पर क्या प्रभाव पडता है| "शिष्य ने ऐसा किया और दोनों पास की झाडियों में छुप गए।

मजदूर जल्द ही अपना काम खत्म कर जूतों की जगह पर आ गया, उसने जैसे ही एक पैर जूते में डाले उसे किसी कठोर चीज का आभास हुआ, उसने जल्दी से जूते हाथ में लिए और देखा की आन्दर कुछ सिक्के पड़े थे, उसे बड़ा आश्चर्य हुआ आौर वो सिक्के हाथ में लेकर बड़े गौर से पलट पलट कर देखने लगा।

फिर इधर उधर देखने लगा, दूर दूर तक कोई नजर नहीं आया तो उसने सिक्के अपनी जेब में डाल लिए, अब उसने दूसरा जूता उठाया, उससे भी सिक्के पड़े थे। मजदूर भावाविभोर हो गया, उसकी आंखो में आंसू आ गए, उसने हाथ जोड़ ऊपर देखते हुए कहा -

"हे भगवान, समय पर प्राप्त इस सहायता के लिए उस अनजाने सहायक का लाख लाख धन्यवाद, उसके सहायता और दयालुता के कारण आज मेरी बीमार पत्नी को दवा आौर भूखे बच्चों को रोटी मिल सकेगी."

मजदूर की बातों को सुन शिष्य की आंखे भर आयी, शिक्षक ने शिष्य से कहा - "क्या तुम्हारी मजाक वाली बात की अपेक्षा जूते में सिक्का डालने से तुम्हे कम खुशी मिली? "

शिष्य बोला," आपने आज मुझे जो पाठ पढ़ाया है उसे मैं जीवन भर नहीं भूलूंगा। आज मैं उन शब्दों का मतलब समझ गया हूँ जिन्हें में पहले कभी नहीं समझ पाया था कि लेने की अपेक्षा देना कहीं अधिक आंनददायी है। देने का आनंद असीम है। देना देवत्व है।"

यास्मीन, +3 **द्वितीय वर्ष**

रसगुल्ला विवाद

<u>ओडिशा का दावा:</u>

ओडिशा में माना जाता है कि रसगुल्ला सबसे पहली बार यहीं पर बना था। कहते हैं कि इस मिठाई का जन्म पुरी के जगन्नाथ मंदिर में हुआ था। इस कहानी के मुताबिक रथयात्रा के बाद जब भगवान जगन्नाथ वापस लौटे तो दरवाजा बंद पाया, क्योंकि देवी लक्ष्मी उनसे नाराज थीं। उनकी नाराजगी इस वजह से थी कि जगन्नाथ उन्हें अपने साथ नहीं ले गए थे। रूठी देवी को मनाने के लिए जगन्नाथ उन्हें रसगुल्ला पेश करते हैं और देवी मान जाती हैं।

भुवनेश्वर के पास एक गांव है पाहला, माना जाता है कि इस गांव में खीरमोहन के नाम से इस मिठाई को बनाया जाता था और प्रसिद्धि फैलने पर ये मिठाई मंदिर तक पहुंची। 13 वीं शताब्दी से रसगुल्ला ओडिशा में बन रहा है। अभी भी रथयात्रा के बाद जब भगवान वापस मंदिरा पहुंचते हैं तो रसगुल्ला ही उन्हें देवी के क्रोध से बचाता हैं।

<u>बंगाल का दावा :</u>

बंगाल के रसगुल्ले के बारे में तो आपने सुना ही होगा। और जब बात रसगुल्ले की हो तो के. सी. दास का जिक्र जरूर होगा। दावा है कि रसगुल्ले का अविष्कार नोबिन चंद्र दास ने 1868 में किया था। नोबिन चंद्र दस कोलकाता के बागबाजार इलाके में मिठाई की दुकान चलाते थे। संदेश की टक्कर में उन्होंने रसगुल्ले का अविष्कार किया था।

कहते हैं कि एक बार एक सेठ रायबहादुर भगवानदास बागला अपने परिवार के साथ कहीं जा रही थे। उनके एक बेटे को प्यास लगी तो उन्होने नोबीन दास की दुकान के पास बग्गी रुकवा ली। नोबीन ने प्यासे बच्चों को पानी तो दिया ही साथ में रोसोगोला भी दिया जो उसे काफी अच्छा लगा। उसने अपने पिता से इसे खाने को कहा। सेठ को भी ये मिठाई बहुत पसंद आई और उसने परिवार आैर दोस्तों के लिए इसे खरीद लिया। बस फिर तो ये मिठाई शहर भर में प्रसिद्ध हो गई।

<u>क्या फर्क है दोनों के बीच :</u>

ओडिशा का रसगुल्ला थोड़ा साइज में बड़ा होता है और गहरे रंग पर होता है, पूरा सफेद नहीं होता। जबकि पश्चिम बंगाल का रसगुल्ला पूरा सफेद होता है और साईज में भी ऎसा होता है कि हर कोई सुविधा से इसे खा पाए। दुनिया भर में फैले बंगाल के लोगों ने इसे पूरी दुनिया में प्रसिद्ध बना दिया है और आज रसगुल्ला पूरी दुनिया का मुँह मीठा कर रहा है।

रसगुल्ला विवाद में आखिरकार पश्चिम बंगाल की जीत हुई है। अब ये माना जा चुका है कि रसगुल्ले की उत्पति बंगाल में हुई थी।

डी. अनुराधा रेड्डी, +3 **द्वितीय वर्ष**

सम्मान

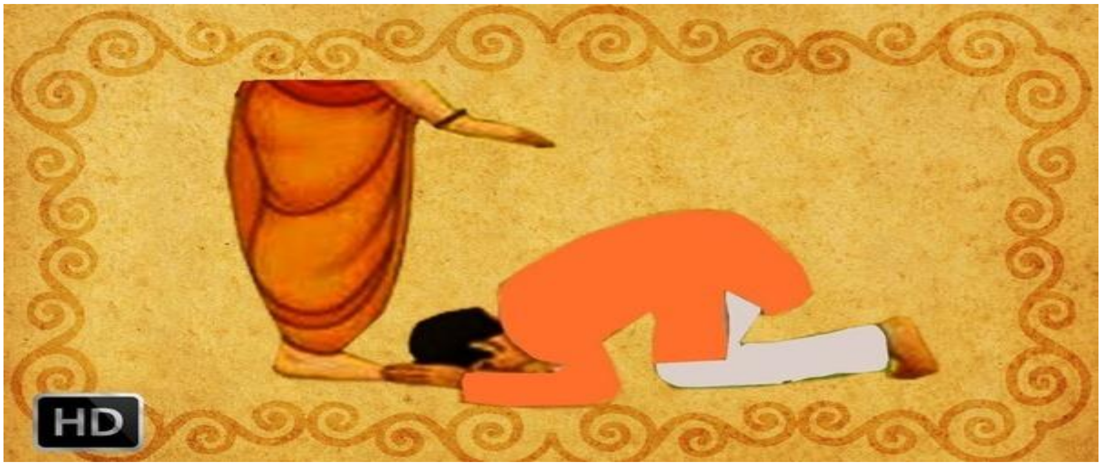

एक बार एक गुरु अपने शिष्य के साथ कहीं जा रहे थे। एक व्यक्ति ने उन्हें सामने से आता देख उनका अभिवादन किया। गुरु ने शिष्य से कहा इस व्यक्ति ने मेरे चरित्र, अनुभव और मेरे उम्र से प्रभावित होकर मेरा अभिवादन किया है।

शिष्य ने कहा नहीं आप भ्रम में हैं |इस व्यक्ति ने युवावस्था में भी मेरे ऐसे चरित्र और जीवन को देखकर मुझे अभिवादन किया है।

दोनों में बहस हो गई। गुरु ने कहा कि उसने मेरा सम्मान किया है और शिष्य ने कहा कि मेरा सम्मान किया है| उन्होंने उसका एक हल निकाला और निर्णय लिया कि हम उस व्यक्ति से ही चलकर पूछ लेते हैं कि उसने किसे नमन किया है।

दोनों उस व्यक्ति के पास गए और पूछा कि तुमने हम दोनों में से किसका अभिवादन किया था? व्यक्ति बहुत आश्चर्य चकित हो गया और सोचने लगा, कुछ देर सोच कर वह बोला, जो सम्मान पाने पर घमंड नहीं करते और सम्मान न मिलाने पर अपने में हीनभावना भी नहीं लाते, मैंने उन्हीं को अभिवादन किया है।

यह सुनकर गुरु और शिष्य मौन रह गए और एक दूसरे को देखने लगे |

डी. अनुराधा रेड्डी, +3 **द्‌वितीय वर्ष**

<u>जीवनी साहित्य</u>

प्रसिद्ध इतिहासज्ञ और जीवनी-लेखक टामस कारलाइल ने अत्यंत सीधी सादी और संक्षिप्त परिभाषा में इसे "एक व्यक्ति का जीवन" कहा है। इस तरह किसी व्यक्ति के जीवन वृत्तांतों को सचेत और कलात्मक ढंग से लिख डालना **जीवनचरित** कहा जा सकता है। यद्यपि इतिहास कुछ हद तक, कुछ लोगों की राय में, महापुरुषों का जीवनवृत्त है तथापि जीवनचरित उससे एक अर्थ में भिन्न हो जाता है। जीवनचरित में किसी एक व्यक्ति के यथार्थ जीवन के इतिहास का आलेखन होता है, अनेक व्यक्तियों के जीवन का नहीं। फिर भी जीवनचरित का लेखक इतिहासकार और कलाकार के कर्त्तव्य के कुछ समीप आए बिना नहीं रह सकता। जीवनचरितकार एक ओर तो व्यक्ति के जीवन की घटनाओं की यथार्थता इतिहासकार की भाँति स्थापित करता है; दूसरी ओर वह साहित्यकार की प्रतिभा और रागात्मकता का तथ्यनिरूपण में उपयोग करता है। उसकी यह स्थिति संभवत: उसे उपन्यासकार के निकट भी ला देती है।

जीवनचरित की सीमा का यदि विस्तार किया जाय तो उसके अंतर्गत आत्मकथा भी आ जायगी। यद्यपि दोनों के लेखक पारस्परिक रुचि और संबद्ध विषय की भिन्नता के कारण घटनाओं के यथार्थ आलेखन में सत्य का निर्वाह समान रूप से नहीं कर पाते। आत्मकथा के लेखक में सतर्कता के बावजूद वह आलोचनात्मक तर्कना चरित्र विश्लेषण और स्पष्टचारिता नहीं आ पाती जो जीवनचरित के लेखक विशिष्टता होती है। इस भिन्नता के लिये किसी को दोषी नहीं माना जा सकता। ऐसा होना पूर्णत: स्वाभाविक है।

जीवनी, जीवन का वृत्तांत होता है। यह साहित्य की एक पुरानी विधा भी है। प्रसिद्ध इतिहासज्ञ और जीवनी-लेखक टामस कारलाइल ने अत्यंत सीधी सादी और संक्षिप्त परिभाषा में इसे "एक व्यक्ति का जीवन" कहा है। इस तरह किसी व्यक्ति के जीवन वृत्तांतों को सचेत और कलात्मक ढंग से लिख डालना जीवनचरित कहा जा सकता है।

<u>जीवनी और जीवनचरित</u>

यद्यपि इतिहास कुछ हद तक, कुछ लोगों की राय में, महापुरुषों का जीवनवृत्त है तथापि जीवनचरित उससे एक अर्थ में भिन्न हो जाता है। जीवनचरित में किसी एक व्यक्ति के यथार्थ जीवन के इतिहास का आलेखन होता है, अनेक व्यक्तियों के जीवन का नहीं। फिर भी जीवनचरित का लेखक इतिहासकार और कलाकार के कर्त्तव्य के कुछ समीप आए बिना नहीं रह सकता। जीवनचरितकार एक ओर तो व्यक्ति के जीवन की घटनाओं की यथार्थता इतिहासकार की

भाँति स्थापित करता है; दूसरी ओर वह साहित्यकार की प्रतिभा और रागात्मकता का तथ्यनिरूपण में उपयोग करता है। उसकी यह स्थिति संभवत: उसे उपन्यासकार के निकट भी ला देती है।

जीवनचरित की सीमा का यदि विस्तार किया जाय तो उसके अंतर्गत आत्मकथा भी आ जायगी। यद्यपि दोनों के लेखक पारस्परिक रुचि और संबद्ध विषय की भिन्नता के कारण घटनाओं के यथार्थ आलेखन में सत्य का निर्वाह समान रूप से नहीं कर पाते। आत्मकथा के लेखक में सतर्कता के बावजूद वह आलोचनात्मक तर्कना चरित्र विश्लेषण और स्पष्टचारिता नहीं आ पाती जो जीवनचरित के लेखक विशिष्टता होती है। इस भिन्नता के लिये किसी को दोषी नहीं माना जा सकता। ऐसा होना पूर्णत: स्वाभाविक है।

भारतेन्दु युगीन जीवनी साहित्य

आधुनिक युग की अन्य अनेक विधाओं के समान जीवनी साहित्य का आरंभ भी भारतेन्दु युग में ही हुआ ।स्वयं भारतेंदु हरिश्चंद्र ने विक्रम, कालिदास, रामानुज, जयदेव, सूरदास, शंकराचार्य, बल्लभाचार्य, मुग़ल बादशाहों, मुसलमान महापुरुषों तथा लॉर्ड मेयो, रिपन प्रभृति अंग्रेज-शासकों से सम्बद्ध अनेक महत्वपूर्ण जीवनियां लिखीं, जो 'चरितावली', 'बदशाहदर्पन', 'उदयपुरोदय' और 'बूंदी का राजवंश' नामक ग्रंथों में संकलित हैं। विषयानुकूल तथा भावानुकूल भाषा-शैली के प्रयोग द्वारा व्यक्ति विशेष के जीवनवृत्त का सशक्त अंकन उनके जीवनी-साहित्य की प्रमुख विशेषता है। भारतेंदु-युग के जीवनी लेखकों में कार्तिकप्रसाद खत्री ने 'अहिल्याबाई का जीवनचरित्र' (1887), 'छत्रपति शिवाजी का जीवनचरित्र' (1890) और 'मीराबाई का जीवनचरित्र' (1893), नाम्नी जीवनियां लिखी।

इस युग के सर्वप्रसिद्ध जीवनी लेखक देवीप्रसाद मुंसिफ हैं। उन्होंने 'महाराज मानसिंह कच्छवाल वाले अमीर का जीवनचरित्र' (1889), 'राजा मालदेव का जीवन चरित्र' (1889), 'उदयसिंह महाराजा '(1893), 'अकबरनामा'(1893) आदि ऐतिहासिक जीवनियां लिख कर जीवनी साहित्य को समृद्ध किया ।

विदेशी महापुरुषों की जीवनियां में रमाशंकर व्यासकृत 'नेपोलियन बोनापार्ट' (1883) भी महत्वपूर्ण हैं। किंतु भारतेंदुयुगीन जीवनी साहित्य का समग्र रूपेण मूल्यांकन करने पर यह कहा जा सकता है कि परिमाण की दृष्टि से अत्यल्प न होने पर भी इस युग के जीवनी साहित्य में प्रायः न तो परिमार्जित एवं प्रतिनिष्टित भाषा प्रयोग परिलक्षित होता है, और न चित्ताकर्षक शैली ही मिलती है । वस्तुतः इस युग को जीवनी साहित्य का बीजवपनकाल कहना ही उचित होगा ।

द्विवेदी युगीन जीवनी साहित्य

जिस प्रकार भारतेंदु युग में स्वयं भारतेंदु हरिश्चंद्र ने जीवनी लेखन के क्षेत्र में अपने समकालीन लेखकों का मार्गदर्शन किया था, उसी भाँति आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी ने भी इस गद्यविधा में यथासंभव रुचि ली । उनके द्वारा रचित जीवनियां 'प्राचीन पंडित और कवि'(1918), 'सुकवि संकीर्तन '(1924), 'चरित चर्चा'(1929) आदि ग्रंथों में संकलित हैं ।

उनके अतिरिक्त जिन अनेक लेखकों ने जीवनी साहित्य को समृद्ध किया, उन सबकी रचनाओं का अनुशीलन करने पर यह कहा जा सकता है कि इस काल में मुख्यतः पांच प्रकार का जीवनी-साहित्य लिखा गया- (क) आर्यसमाज के प्रवर्तक ऋषि दयानंद तथा अन्य महापुरुषों से संबंधित जीवनियां, (ख) राष्ट्रीय महापुरुषों से संबंधित जीवनियां,(ग) ऐतिहासिक महापुरुषों से संबंधित जीवनियां, (घ) विदेश के महापुरुषों से संबंधित जीवनियां,(ङ) महिलाओं से संबंधितत जीवनियां ।इनमे से महर्षि दयानंद का जीवनचरित्र अधिक परिणाम में लिखा गया,जिसका मुख्य कारण यह था कि इस युग में आर्यसमाज द्वारा किये गये कार्य अपनी पराकाष्ठा पर थे।

आलोच्य युग राष्ट्रीय चेतना का युग था।इस काल में अंग्रेजी शासन को नष्ट करने के लिए जनता में अपूर्व संगठन-शक्ति पैदा हो गयी थी ।फलस्वरूप कुछ लेखकों ने उन महापुरुषों की जीवनियां भी लिखीं, जो युग की विचारधारा का नेतृत्व कर रहे थे। महादेव भट्ट, पारसनाथ त्रिपाठी, मुकुंदीलाल वर्मा, संपूर्णानंद, नंदकुमार देव वर्मा, बद्रीप्रसाद गुप्त, बृजबिहारी शुक्ल, शीतलाचरण वाजपेयी, मातासेवक आदि साहित्यकारों ने क्रमशः 'लाजपत महिमा'(1907), 'तपोनिष्ठ महात्मा अरविंद घोष'(1909), 'कर्मवीर गांधी'(1913), 'धर्मवीर गांधी'(1914), 'महात्मा गोखले'(1914), 'दादाभाई नौरोजी'(1914), 'मदनमोहन मालवीय'(1916), 'रमेशचंद्र दत्त'(1917), 'लोकमान्य तिलक का चरित्र'(1918) आदि रचनायें लिखीं ।

राष्ट्रीय चेतना को बल प्रदान करने में पूर्ववर्ती प्रसिद्ध ऐतिहासिक व्यक्तियों की जीवन-गाथाएं भी सहायक सिद्ध होती हैं। यही कारण है कि इस युग के लेखकों ने ऐतिहासिक जीवनियां पर्याप्त मात्रा में लिखी हैं ।इस दृष्टि से कार्तिकप्रसाद, बलादेवप्रसाद मिश्र, देवीप्रसाद, जवालादत्त शर्मा, अनंदकिशोर मेहता, रघुनंदनप्रसाद मिश्र, सम्पूर्णानन्द और लक्ष्मीधर वाजपेयी द्वारा क्रमशः लिखित 'छत्रपति शिवाजीका जीवनचरित्र'(1901), 'पृथ्वीराज चौहान'(1902), 'महाराणा प्रतापसिंह'(1903), 'सिक्खों के दस गुरु'(1909), 'गुरु गोविंदसिंह जी'(1914), 'शिवजी और मराठा जाती '(1914), 'महाराज छत्रसाल'(1916) तथा 'छत्रपति शिवाजी'(1917) शीर्षक कृतियां विशेषतः पठनीय हैं ।

आलोच्य युग में देश विदेश की महान महिलाओं से संबंधित जीवनियां भी पर्याप्त मात्रा में लिखी गयीं। गंगाप्रसाद गुप्ता, परमानंद, हनुमंत सिंह, पन्नालाल, यशोदादेवी , द्वारकाप्रसाद चतुर्वेदी, ललिताप्रसाद शर्मा, रामजीलाल वर्मा, लालप्रसाद वर्मा, सुर्यनारायण त्रिपाठी, रामानंद द्विवेदी तथा दत्तात्रेय बलवंत पारस ने क्रमशः 'रानी भवानी'(1904), 'पतिव्रता स्त्रियों के जीवन चरित्र'(1904), 'रमणीय रत्नमाला'(1907), 'वीर पत्नी संयोगिता'(1912), 'आदर्श महिलाएं'(1917), 'विदुषी स्त्रियां'_भाग 1, 2 (1912), 'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई'(1918) शीषर्क जीवनियों की रचना कर इस दिशा में प्रशंसनीय योग दिया ।इस युग मे लेखकों का झुकाव भारतीय महिलाओं के गुण स्तवन की और ही अधिक रहा। समग्रतः यह कहा जा सकता है कि द्विवेदीयुगीन जीवनी साहित्य पर्याप्त समृद्ध एवं वैविध्यपूर्ण है ।

छायावाद युगीन जीवनी साहित्य

आलोच्य युग में जीवनी लेखन की दिशा में पर्याप्त कार्य हुआ। तत्कालीन राष्ट्रीय आंदोलन के प्रभावस्वरूप स्वभावतः लेखकों की सर्वाधिक अभिरुचि राष्ट्रीय नेताओं से संबंधित जीवनियां लिखने की और रही। इसके साथ ही इतिहासप्रसिद्ध महापुरुषों और महान महिलाओं के जीवनवृत्त प्रस्तुत करने की ओर भी ध्यान दिया गया ।राष्ट्रीय नेताओं के संदर्भ में नवजादिकलाल श्रीवास्तव, ईश्वरीप्रसाद शर्मा, रामदयाल तिवरी, रामनरेश त्रिपाठी, नरोत्तमदास व्यास, डॉ राजेंद्रप्रसाद, नंदकुमारदेव शर्मा ने क्रमशः 'देशभक्त लाला लाजपतराय'(1920), 'बाल गंगाधर तिलक'(1920), 'गांधी मीमांसा'(1921), 'गांधी जी कौन हैं'(1921), 'गांधी गौरव'(1921), 'चंपारन में महात्मा गांधी'(1922), 'लाजपत महिमा'(1922), 'पं. जवाहरलाल नेहरू'(1926), 'श्री गांधी'(1931), 'लाल लाजपतराय'(1938), 'चंद्रशेखर आजाद'(1938) आदि रचनाओं के माध्यम से जीवनी साहित्य को समृद्ध किया ।गांधी जी इस युग के सर्वाधिक लोकप्रिय नेता थे ।

समसामयिक राष्ट्रीय विभूतियों के अतिरिक्त इस काल में भारतीय इतिहास के महापुरुषों से संबंधित जीवनियां भी पर्याप्त संख्या में लिखी गयीं ।रामनरेश त्रिपाठी, संपूर्णानंद, चंद्रशेखर पाठक, रामवृक्ष शर्मा, गंगाप्रसाद मेहता, प्रेमचंद आदि ने क्रमशः 'पृथ्वीराज चौहान'(1919), 'सम्राट हर्षवर्द्धन'(1920), 'राणा प्रतापसिंह'(1920), 'शिवजी'(1925), 'महाराणा प्रतापसिंह'(1927), 'चंद्रगुप्त विक्रमादित्य'(1932), 'दुर्गादास'(1938) आदि कृतियों की रचना कर इस सहित्यविधा के विकास में योगदान किया ।

शिवव्रतलाल वर्मन, मनोरामबाई, जहूरबख्श, जटाधरप्रसाद शर्मा बिमल, जगन्नाथ शर्मा, भगवददत्त आदि ने क्रमशः 'सच्ची देवियां'(1921), 'विद्यो त्तमा(1924), 'आर्य महिलारत्न'(1924), 'अहिल्याबाई'(1926), 'रमणी नवरत्न'(1927) तथा 'भारतीय महिला'(1935)

नाम्नी रचनाओं का प्रणयन कर एतद्विषयक साहित्य की अभिवृद्धि की। इस प्रकार आलोच्य युग के जीवनी लेखकों की दृष्टि पाठकों को राष्ट्रप्रेम और जनसेवा की प्रेरणा देने की ओर रही है ।

छायावादोत्तर युगीन जीवनी साहित्य

आलोच्य युग में जीवनी-साहित्य का बहुमुखी विकास हुआ। लोकप्रिय नेताओं, संत-महात्माओं, साहित्यकारों, विदेशी महापुरुषों, वैज्ञानिकों, खिलाड़ियों, उद्योगपतियों आदि से संम्बन्धित जीवनियां प्रचुर परिमाण में लिखी गयीं। महात्मा गांधी इस युग के सर्वाधिक लोकप्रिय नेता थे, उनसे संबंधित जीवनियां सर्वाधिक संख्यां में उपलब्ध होती है। घनश्यामदास बिड़ला, सुशील नायर, सुनमंगल प्रकाश, डॉ. राजेन्द्रप्रसाद द्वारा क्रमशः लिखित 'बापू', 'बापू की झांकियाँ', 'बापू के कदमों में' और 'अकाल पुरुष गांधी' इस दिशा में उल्लेखनीय कृतियां है।

सुभाषचंद्र बोस पर लिखे गए जीवनी-ग्रन्थों में हरिकृष्ण त्रिवेदी, छविनाथ पांडेय, गिरीशचंद्र जोशी द्वारा क्रमशः रचित 'सुभाषचंद्र बोस', 'नेता जी सुभाष', 'नेताजी सुभाषचंद्र बोष' उल्लेखनीय है। इन कृतियों के माध्यम से सुभाषचंद्र बोष के निजी जीवन के साथ-साथ उनके नेतृत्व संम्बंधी गुणों का भी पता चलता है।

आलोच्य युग में भारतीय इतिहास से सम्बंधित महापुरुषों की जीवनियां लिखने की भी प्रवृत्ति लक्षित होती है । इस संन्दर्भ में यह ध्यातव्य है कि जीवन को आधार बना कर सर्वाधिक जीवनियां लिखी गयी । इनमें भी लाला लाजपतराय-विरचित 'छत्रपति शिवाजी ' विशेष रूप से उल्लेखनीय है ।

जीवनी लेखन के क्षेत्र में इस युग की सबसे महत्त्वपूर्ण देन साहित्यकारों के जीवनचरित्र हैं। कथासम्राट मुंशी प्रेमचंद के जीवन को आधार बना कर सबसे अधिक जीवनियाँ लिखी गयी। प्रेमचंद बचपन से लेकर अंतिम दिन तक के संघर्षमय जीवन को पूरी ईमानदारी एवं सच्चाई के साथ प्रस्तुत किया है ।प्रेमचंद के जीवन पर एक अन्य महत्वपूर्ण कृति मदनगोपाल कृत 'कलम का मजदूर' (1965) है, जिसमें लेखक ने चरितनायक के संघर्षमय लेखक ने चरितनायक के संघर्षमय जीवन की तेजोदृप्त छवी अंकित की है ।

इस युग के कुछ लेखकों ने दूसरी भाषाओं में लिखे गये उच्चकोटि की जीवनी ग्रंथों का अनुवाद करके भी हिंदी जीवनी साहित्य को समृद्ध किया है ।

सोनालि राउत, +3 **द्वितीय वर्ष**

प्रभा खेतान

डॉ॰ प्रभा खेतान (१ नवंबर १९४२ - २० सितंबर २००८) प्रभा खेतान फाउन्डेशन की संस्थापक अध्यक्षा, नारी विषयक कार्यों में सक्रिय रूप से भागीदार, फिगरेट नामक महिला स्वास्थ्य केन्द्र की स्थापक, १९६६ से १९७६ तक चमड़े तथा सिले-सिलाए वस्त्रों की निर्यातक, अपनी कंपनी 'न्यू होराईजन लिमिटेड' की प्रबंध निदेशिका, हिन्दी भाषा की लब्ध प्रतिष्ठित उपन्यासकार, कवयित्री तथा नारीवादी चिंतक तथा समाज सेविका थीं। उन्हें कलकत्ता चैंबर ऑफ कॉमर्स की एकमात्र महिला अध्यक्ष होने का गौरव प्राप्त था। वे केन्द्रीय हिन्दी संस्थान की सदस्या थीं।

कोलकाता विश्वविद्यालय से दर्शन शास्त्र में स्नातकोत्तर उपाधि लेने वाली प्रभा ने "ज्यां पॉल सार्त्र के अस्तित्ववाद" पर पीएचडी की थी। उन्होंने 12 वर्ष की उम्र से ही अपनी साहित्य यात्रा की शुरुवात कर दी थी और उनकी पहली रचना (कविता) सुप्रभात में छपी थी, तब वे सातवीं कक्षा की छात्रा थी। १९८०-८१ से वे पूर्ण कालीन साहित्यिक सेवा में लग गईं। उनकी छः कविता संग्रह-अपरिचित उजाले (१९८१), सीढ़ीयां चढ़ती मैं (१९८२), एक और आकाश की खोज में (१९८५), कृष्णधर्मा मैं (१९८६), हुस्नोबानो और अन्य कविताएं (१९८७), अहिल्या (१९८८) और आठ उपन्यास- आओ पेपे घर चले, तालाबंदी (१९९१), अग्निसंभवा (१९९२), एडस, छिन्नमस्ता (१९९३), अपने -अपने चेहरे (१९९४), पीली आंधी (१९९६) और स्त्री पक्ष (१९९९) तथा दो लघु उपन्यास *शब्दों का मसीहा सार्त्र, बाजार के बीच: बाजार के खिलाफ* सभी साहित्यिक क्षेत्र में प्रशंसित रहे। फ्रांसीसी रचनाकार सिमोन द बोउवा की पुस्तक 'दि सेकेंड सेक्स' के अनुवाद 'स्त्री उपेक्षिता' ने उन्हें काफी चर्चित किया। इसके अतिरिक्त उनकी कई पुस्तकें जैसे बाजार बीच बाजार के खिलाफ और उपनिवेश में स्त्री जैसी रचनाओं ने उनकी नारीवादी छवि को स्थापित किया। अपने जीवन के अनछुए पहलुओं को उजागर करने वाली आत्मकथा 'अन्या से अनन्या' लिखकर सौम्य और शालीन प्रभा खेतान ने साहित्य जगत को चौंका दिया।

डॉ॰ प्रभा खेतान के साहित्य में स्त्री यंत्रणा को आसानी से देखा जा सकता है। बंगाली स्त्रियों के बहाने इन्होंने स्त्री जीवन में काफी बारीकी से झांकने का बखूबी प्रयास किया। आपने कई निबन्ध भी लिखे। डॉ॰ प्रभा खेतान को जहाँ स्त्रीवादी चिन्तक होने का गौरव प्राप्त हुआ वहीं वे स्त्री चेतना के कार्यों में सक्रिय रूप से भी आप हिस्सा लेती रहीं। उन्हें 'प्रतिभाशाली महिला पुरस्कार' और टॉप पर्सनैलिटी अवार्ड' भी प्रदान किया गया। साहित्य में उल्लेखनीय योगदान के लिये केन्द्रीय हिन्दी संस्थान का 'महापंडित राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार' राष्ट्रपति ने उन्हें अपने हाथों से प्रदान किया।

यादों के गलियारे से

विश्व हिंदी दिवस

महाविद्यालय के वार्षिकोत्सव में विभाग की छात्रायें

धन्यवाद